بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The Sadr Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीहिल अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक **19.05.2017** मस्जिद बैतुल फ़तूह, लंदन।

अगर अपनी ज़िन्दगियों को हम शांति पूर्ण बनाना चाहते हैं,
अगर हम अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को हासिल करना चाहते हैं,
तो हमें उन्हीं शिष्टाचारों को अपने जीवन का हिस्सा बनाने की ज़रूरत है जो हमारे आक़ा व मुताअ हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हर मामले में हमारे सामने पेश फ़रमाए और फिर इस ज़माने में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ग़ुलाम-ए-सादिक़ ने उनको खोल कर हमारे समाने रखा और उन पर अमल करने की तरफ़ हमें ध्यान दिलाया

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- वह शिक्षा जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उतरी, हमारे हर मामले में रहनुमाई करती है। अगर हममें से हर एक इस तअलीम पर अमल करने वाला बन जाए तो एक हसीन समाज स्थापित हो सकता है। क़ुर्आन-ए-करीम में असंख्य आदेश हैं लेकिन उन सबको एक जगह एक वाक्य में अल्लाह तआला ने जमा कर दिया, यह कह कर कि لَقَدۡ کَانَ لَکُمۡ فِیۡہِمۡ اُسۡوَۃٌ حَسَنَۃٌ अर्थात- यक़ीनन तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल में नेक नमूना है। और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी, घर से लेकर समाज तक क़ुर्आन-ए-करीम के समस्त आदेशों का पालन करने वाली थी। अतः वास्तविक कामयाबी उसी समय हो सकती है जब हम हर मामले में उस सुन्दर आचरण के नमूने को अपने सामने रखें। कई बार इन्सान बड़े बड़े मामलों में तो बड़े अच्छे नमूने दिखा रहा होता है लेकिन ज़ाहिर में छोटी नज़र आने वाली बातों को इस तरह अनदेखा कर दिया जाता है जैसे उनका महत्त्व ही कोई न हो। अगर अपनी ज़िन्दगियों को हम शांति पूर्ण बनाना चाहते हैं, अगर हम अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को हासिल करना चाहते हैं, तो हमें उन्हीं शिष्टाचारों को अपने जीवन का हिस्सा बनाने की ज़रूरत है जो हमारे आक़ा व मुताअ हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हर मामले में हमारे सामने पेश फ़रमाए और फिर इस ज़माने में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ग़ुलाम-ए-सादिक़ ने उनको खोल कर हमारे समाने रखा और उन पर अमल करने की तरफ़ हमें ध्यान दिलाया।

हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने फ़रमाया- इस समय मैं इस संदर्भ में, पुरुषों की विभिन्न रूप में ज़िम्मेदारियों के मामले में, कुछ कहूँगा। मर्द की घर के मुख्या के रूप में भी ज़िम्मेदारी है, पुरुष की पति होने के रूप में भी ज़िम्मेदारी है, मर्द का पिता होने की अवस्था में भी दायित्व है फिर औलाद होने के रूप में भी कर्त्तव्य है। अगर हर पुरुष इन ज़िम्मेदारियों को समझ ले और इन्हें अदा करने की कोशिश करे तो यही समाज के व्यापक अमन के क़याम का और मुहब्बत और भाईचारे के क़ायम करने का माध्यम बन जाती है। यही बातें औलाद की तर्बियत का माध्यम बन कर शांति पूर्ण और मानवाधिकारों को स्थापित करने वाली नस्ल के फैलने का साधन बन जाती हैं। घरों के सकून इन्हीं बातों से क़ायम होते हैं। आजकल कई घरों से शिकायतें सामने आती हैं कि मर्द, न अपनी बीवी का सम्मान करता है, न उसे उचित अधिकार देता है और न ही औलाद की तर्बियत का हक़ अदा करता है। केवल नाम का मुख्या है। ऐसी शिकायतें हिन्दुस्तान से भी और पाकिस्तान से भी हैं कि पति ने पत्नियों को मार मार कर शरीर पर नील डाल दिए या घायल कर दिया, मुंह सुजा दिए। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अगर मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने के बाद भी जाहिल लोगों की तरह ही रहना है तो फिर अपनी हालतों के बदलने का एहद करके हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आने का कोई लाभ नहीं। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तो सबसे पहले घर का मुख्या

होने के रूप में तौहीद के क़याम का महत्त्व स्पष्ट करके उसके अनुसार अमल कराया लेकिन यह काम भी प्यार और मुहब्बत से कराया, डन्डे के ज़ोर पर नहीं। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तो अत्यंत व्यस्त होने के बावजूद अपने घर वालों के हक़ अदा किए, प्यार और नर्मी और मुहब्बत से ये हक़ अदा किए। पहले यह आभास कराया कि तुम्हारी ज़िम्मेदारी तो तौहीद का क़याम है, अल्लाह तआला की इबादत है। अतः हज़रत आयशा रज़ी. कहती हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रात को नफ़ल के लिए उठते थे और फिर सुबह नमाज़ से पहले हमें पानी का छींटा मार कर उठाते थे कि नफ़ल पढ़ो, इबादत करो, अल्लाह तआला का हक़ अदा करो। हज़रत आयशा रज़ीअल्लाहु तआला अन्हा आपके घरेलू कामों का विवरण बयान फ़रमाते हुए फ़रमाती हैं कि आप अपने कपड़े स्वयं सी लेते थे, जूते टांक लिया करते थे, घर का डोल इत्यादि मरम्मत कर लिया करते थे। पस उन नमूनों को सामने रखते हुए बहुत से पतियों को आत्म निरीक्षण करना चाहिए। एक अवसर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया- मोमिनों में से कामिल ईमान वाला वह है जिसके आचरण अच्छे हैं और तुम में से आचरण के अनुसार उत्तम वे हैं जो अपनी औरतों के लिए अच्छे हैं। पस हर उस व्यक्ति को जिसका अपनी बीवी से अच्छा सलूक नहीं है, निरीक्षण करना चाहिए कि यह ईमान के स्तर की बुलन्दी की भी निशानी है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पतियों के कर्त्तव्यों तथा बीवियों से सुन्दर व्यवहार का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि अशलीलता के अतिरिक्त समस्त त्रूटियाँ औरतों की सहन करनी चाहिएँ और फ़रमाया कि हमें तो कमाल बेशर्मी मालूम होती है कि मर्द होकर औरतो से जंग करें।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- वे लोग जो अपनी बीवियों से ज़रा ज़रा सी बात पर लड़ते हैं, हाथ उठाते हैं उनको कुछ होश करनी चाहिए। पस जैसा कि मैंने कहा कि यह प्रत्यक्षतः छोटी नज़र आने वाली बातें हैं, ये छोटी नहीं हैं। कुछ मर्द कह देते हैं कि औरत में अमुक अमुक बुराई है जिसके कारण हमें सख़्ती करनी पड़ी, इस संदर्भ में मर्दों को पहले अपना निरीक्षण करना चाहिए कि क्या वे दीन के स्तर पर पूरा उतरने वाले हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ऐसे ही मर्दों को नहीसत करते हुए फ़रमाते हैं कि मर्द अगर सुशील न हो तो औरत कब सुशील हो सकती है। पहली शर्त तो यही है मर्द नेक हो तभी उसकी बीवी भी सुशील होगी। फ़रमाया कि केवल बातों से औरत को नसीहत नहीं देनी चाहिए बल्कि अपने आचरण से यदि नसीहत दी जाए तो उसका असर होता है। फ़रमाया कि जो व्यक्ति ख़ुदा से स्वयं नहीं डरता तो औरत उससे कैसे डरे। भला जब पति रात को उठ उठ कर दुआ करता है, रोता है तो औरत एक दो दिन तक देखेगी, आख़िर एक दिन उसे भी ख़्याल आएगा और ज़रूर प्रभावित होगी। फ़रमाते हैं कि औरत में प्रभावित होने की प्रवृत्ति अधिक होती है, उनके सुधार के लिए कोई मदर्सा भी काम नहीं कर सकता, जितना पति का आचरण प्रभावित करता है। यह मर्दों का जुल्म है कि वे औरतों को ऐसा अवसर देते हैं कि वे इनकी कमियाँ पकड़ें, इनको चाहिए कि औरतों को कदापि ऐसा अवसर न दें कि वे यह कह सकें कि मेरा पति अमुक ग़लती करता है। औरत टकरें मार मार कर थक जाए और किसी बुराई का उसे पता ही न चल सके तो उस समय उसको दीनदारी का ध्यान आता है और वह दीन को समझती है। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- जब ऐसी सूरत हो कि तलाश करने के बावजूद मर्द में कोई बुराई नज़र न आए तो तब फिर औरत अगर दीनदार नहीं भी है तो दीन की तरफ़ उसकी तवज्जो पैदा होगी।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- एक ओर तो ये आशाएँ हैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की उन मर्दों से जो आपकी बैअत में आए और दूसरी तरफ़ हम देखते हैं कि बहुत से मर्द हैं जिनकी शिकायतें औरतें लेकर आती हैं कि नमाज़ में सुस्त हैं, जमाअत के साथ तो नमाज़ अलग रही, घर में भी नमाज़ नहीं पढ़ते। दीन का इल्म मर्दों का कमज़ोर है। चन्दों में कई घरों के मर्द कमज़ोर हैं। टी वी के व्यर्थ और अशलील प्रोग्राम देखने की मर्दों की शिकायत है। बच्चों की तर्बियत में उदासीनता की शिकायत मर्दों के बारे में है और अगर कभी घर का मुख्या बनने की कोशिश करेंगे भी तो सिवाए डांट डपट, मार धाड़ के कुछ नहीं होता। औरतें मर्दों से सीखने के बजाए, बहुत से घरों में औरतें मर्दों को सिखा रही होती हैं या उनको ध्यान दिला रही होती हैं ताकि बच्चे बिगड़ न जाएँ। जिन घरों में भी बच्चे प्रशिक्षण हीनता का शिकार हैं वहाँ सामान्यतः कारण मर्दों की उदासीनता अथवा बीवी और बच्चों पर अकारण की सख़्ती है। कई बच्चे भी कई बार आकर मुझसे शिकायत कर जाते हैं कि हमारे बाप का सलूक अच्छा नहीं है हमारी माँ से अथवा हमसे। पस यदि घरों को शांति पूर्ण बनाना है, यदि अगली नस्लों की तर्बियत करनी है और उनको दीन के साथ जोड़ कर रखना है तो मर्दों को अपनी हालतों की ओर ध्यान देना होगा। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मर्दों को ध्यान दिलाते हुए आगे फ़रमाते हैं कि मर्द अपने घर का इमाम होता है, पस यदि वही कुप्रभाव छोड़ता है तो कितना बुरा प्रभाव पड़ने की

आशंका है। फ़रमाया कि मर्द को चाहिए कि अपनी शक्तियों को उचित रूप से तथा उचित समय पर उपयोग करे। उदारणतः एक शक्ति क्रोध की है, जब संतुलन से अधिक हो तो जनून के निकट होती है। फ़रमाया कि जो आदमी शदीदुल ग़ज़ब (क्रोधित प्रवृत्ति) होता है उससे हिकमत का चश्मा छीन लिया जाता है। बल्कि यदि कोई विरोधी हो तो उसके साथ भी घोर क्रोधित होकर बात न करे।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अतः यह स्तर है, घर में बीवी बच्चों पर क्रोधित नहीं होना और यह क्रोध तो अलग रहा यदि कोई मुख़ालिफ़ है तो उससे भी क्रोधित होकर और बुद्धि हीन होकर बात नहीं करनी। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- नज़ारत इस्लाहो इरशाद और ज़ैली तंज़ीमों को इस ओर ध्यान देना चाहिए और बाक़ी दुनया में भी अपनी तर्बियत के प्रोग्राम की तरफ़ ज़्यादा ध्यान देना चाहिए। तबलीग़ कर रहे हैं और दीनी मसाईल सीख रहे हैं लेकिन घरों में बेचैनियाँ हैं तो तबलीग़ का कोई लाभ नहीं है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अतः इससे पहले कि घर टूटें और बच्चे बर्बाद हों ऐसे मर्दों को अपनी ज़िम्मेदारियों को समझना चाहिए जो उन पर अपने बीवी बच्चों के बारे में दीन डालता है, जो इस्लाम ने उनकी ज़िम्मेदारियाँ बताई हैं। औरतों के हक़ और उनसे सलूक के बारे में एक अवसर पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि औरतों के हक़ की जैसी हिफ़ाज़त इस्लाम ने की है वैसी दूसरे मज़हब ने नहीं की। संक्षेप में फ़रमा दिया कि وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِي عَلَيْهِنَّ कि जैसे मर्दों के औरतों पर हक़ हैं वैसे ही औरतों के मर्दों पर हक़ हैं।

चाहिए कि पत्नियों से पतियों का ऐस सम्बंध हो जैसे दो सच्चे और पक्के दोस्तों का होता है। इंसान के शुभ आचरण और ख़ुदा तआला से सम्बंध की पहली गवाह तो यही औरतें होती हैं यदि उन्हीं से उनके सम्बंध अच्छे नहीं हैं तो फिर किस तरह सम्भव है कि ख़ुदा तआला से दोस्ती हो।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- फिर मर्दों की बाप के रूप में ज़िम्मेदारी है उसे भी समझने की आवश्यकता है। केवल यह न समझ लें कि यह केवल माँ की ज़िम्मेदारी है कि बच्चे की तर्बियत करे। निःसन्देह एक विशेष आयु तक बच्चे का समय माँ के साथ अधिक गुज़रता है और अत्यंत बचपन की माँओं की तर्बियत बड़ी महत्त्व पूर्ण भूमिका अदा करती है लेकिन उससे मर्द अपने कर्त्तव्यों के प्रति बरी नहीं हो जाते। बापों को भी अपने बच्चों की तर्बियत में अपनी भूमिका निभानी चाहिए। विशेष रूप से जब लड़के सात आठ साल की आयु को पहुंचते हैं तो उसके बाद फिर वे बापों की नज़र के मुहताज होते हैं अन्यथा विशेषतः इस पाश्चात्य वातावरण में बच्चों के बिगड़ने की अधिक सम्भावनाएँ हो जाती हैं। बापों को बच्चों का जहाँ आदर सम्मान करने की आवश्यकता है ताकि उनके आचरण अच्छे हों वहाँ उन पर गहरी नज़र रखने की भी ज़रूरत है ताकि वे माहौल के बुरे प्रभाव से बच कर रहें। फिर बापों की यह भी ज़िम्मेदारी है कि जहाँ बच्चों की तर्बियत की तरफ़ क्रियाशील ध्यान दें वहाँ उनके लिए दुआओं की ओर भी ध्यान दें, यह भी ज़रूरी चीज़ है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि हिदायत और वास्तविक तर्बियत, ख़ुदा का काम है। सख़्त पीछा करना और एक बात पर अत्यधिक हठ करना, ज़ाहिर करता है कि मानो हम ही हिदायत के मालिक हैं और हम इसको अपनी मर्ज़ी के अनुसार एक राह पर ले आएँगे, यह एक प्रकार का गुप्त शिर्क है, इससे हमारी जमाअत को बचना चाहिए। फ़रमाया- हम तो अपने बच्चों के लिए दुआ करते हैं और हलके फुलके रूप में नियम और शिष्टाचार की पाबन्दी की शिक्षा देते हैं। अतः इससे अधिक नहीं और फिर अपना पूरा भरोसा अल्लाह तआला पर रखते हैं। जैसा किसी में दिव्य बीज होगा, समय आने पर हरा भरा हो जाएगा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- कुछ लोगों का यह भी ख़्याल होता है कि औलाद के लिए कुछ माल छोड़ना चाहिए। मुझे हैरत आती है कि माल छोड़ने का तो उनको ध्यान आता है मगर यह ध्यान नहीं आता कि इसकी चिंता करें कि औलाद नेक हो, बुरी न हो अर्थात बदकार और बद न हो, बल्कि सुशील और नेक हो, मगर यह ध्यान भी नहीं आता और इसकी चिंता की जाती है। ख़ुदा तआला स्वयं फ़रमाता है وَهُوَ يَتَوَلَّى الصَّالِحِينَ अर्थात- अल्लाह तआला अपने नेक बन्दों का सहायक और समर्थक होता है। यदि संतान भाग्य हीन है तो लाखों रुपए उसके लिए छोड़ जाओ, वह बुरे कामों में तबाह करके फिर कंगाल हो जाएगी तथा उन दुविधाओं और कठिनाईयों में पड़ेगी जो उसके लिए निश्चित हैं।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- जहाँ इस्लाम बाप को यह कहता है कि अपने बच्चों के प्रशिक्षण की ओर ध्यान दो और उनके लिए दुआएँ करो वहाँ बच्चों को भी आदेश देता है कि तुम्हारा भी कुछ दायित्व है। जब तुम व्यस्क हो जाओ तो माँ बाप के भी तुम पर कुछ अधिकार हैं, उनको तुमने अदा करना है। ये रिश्तों के हक़ की कड़ियाँ ही हैं जो एक दूसरे से जुड़ने से शांति पूर्ण समाज पैदा करती हैं। माँ बाप के हक़ अदा करने की कितनी बड़ी ज़िम्मेदारी है, इसकी कितनी अहमियत है, इस बात का आभास प्रत्येक मोमिन को होना चाहिए। एक लड़का जब बालिग़ होता है तो उसने किस तरह माँ बाप का हक़ अदा करना है, इस बात को समझाते हुए आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक अवसर पर फ़रमाया, जब एक व्यक्ति ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में निवेदन किया कि मैं जिहाद पर जाना चाहता हूँ, फ़रमाया- क्या तेरे माँ बाप ज़िन्दा हैं? उसने कहा हाँ, जिन्दा हैं। तो आपने फ़रमाया कि उन दोनों की सेवा करो यही तुम्हारा जिहाद है।

एक सहाबी कहते हैं कि हम लोग आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर थे कि बनी सलमा का एक व्यक्ति हाज़िर हुआ और पूछने लगा कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! वालिदैन की वफ़ात के बाद कोई ऐसी नेकी है जो मैं उनके लिए कर सकूँ? आपने फ़रमाया- हाँ क्यूँ नहीं, तुम उनके लिए दुआएँ करो, उनके लिए क्षमा याचना करो, उन्होंने जो वादे किसी से कर रखे थे उन्हें पूरा करो, उनके परिजनों से उसी प्रकार निर्मल भावना और सुन्दर व्यवहार करो जिस प्रकार वे अपने जीवन में उनके साथ किया करते थे और उनके दोस्तों के साथ आदर और सम्मान का सलूक करो।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- शादियों के बाद विशेष रूप से उन दायित्वों की ओर ध्यान देना चाहिए और यदि इंसान विवेक के साथ बीवी के भी दायित्व पूरे कर रहा हो और वालिदैन की भी सेवा कर रहा हो और बीवी को भी हिकमत से एहसास दिलाए कि सास ससुर का क्या महत्त्व है और ख़ुद भी अपने सास ससुर की सेवा और इसकी अहमियत को जानता हो तो घरों में कभी झगड़े पैदा न हों, जो कई बार पैदा हो रहे होते हैं। कई बार दीनी मतभेद के कारण बाप बेटों में मतभेद उत्पन्न हो जाता है। कुछ नौ-मुबाअीन अब भी यह सवाल करते हैं, इस सूरत में बेटों को बापों से नेक सलूक भी करना है और सेवा भी उनकी करनी है। इसका विस्तार पूर्वक जवाब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने दिया। एक व्यक्ति ने सवाल किया कि या हज़रत! वालिदैन की सेवा तथा उनका आज्ञा पालन अल्लाह तआला ने इंसान के लिए अनिवार्य किया है मगर मेरे वालिदैन हुज़ूर की बैअत में आने के कारण मुझसे बड़े नाराज़ हैं और मेरी शकल तक देखना पसन्द नहीं करते। अतः जब मैं हुज़ूर की बैअत के लिए आने को था तो उन्होंने मुझे कहा कि हम से पत्र व्यवहार भी न करना और अब हम तुम्हारी शकल भी देखना नहीं चाहते। अब मैं अल्लाह तआला के इस आदेश को कैसे पूरा करूँ।

आपने फ़रमाया कि क़ुर्आन शरीफ़ जहाँ वालिदैन के आज्ञा पालन और सेवा का आदेश देता है वहाँ यह भी फ़रमाता है कि رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا فِيْ نُفُوْسِكُمْ ۭ اِنْ تَكُوْنُوْا صٰلِحِيْنَ فَاِنَّهٗ كَانَ لِلْاَوَّابِيْنَ غَفُوْرًا अर्थात- अल्लाह तआला ख़ूब जानता है जो कुछ तुम्हारे दिलों में है यदि तुम नेक हो तो वह अपनी तरफ़ झुकने वालों के लिए ग़फ़ूर (क्षमाशील) है। सहाबा रिज़वानुल्लाह अलैहिम को भी ऐसी मुशकिलें पेश आ गई थीं कि दीन की मजबूरियों के कारण उनकी उनके वालिदैन के साथ अनबन हो गई थी। अतः तुम अपनी ओर से उनकी ख़ैरियत और देखभाल के लिए हमेशा तय्यार रहो, जब कोई अवसर मिले हाथ से न जाने दो, तुम्हारी नीयत का सवाब तुम को मिलकर रहेगा। यदि केवल दीन के कारण और अल्लाह तआला की रज़ा को प्राथमिकता देने के लिए वालिदैन से अलग होना पड़ा तो यह एक मजबूरी है। अपनी ओर से वालिदैन के हक़ अदा करने की कोशिश में लगे रहो और उनके हक़ में दुआएँ करते रहो और नीयत के शुद्ध होने का ध्यान रखो, नीयत सही होनी चाहिए। पस बहुत से लोग जो आज भी यह सवाल पूछते हैं कि वालिदैन के प्रति भी कर्त्तव्य हैं उनको हम कैसे अदा करें ऐसे हालात में, तो उनके लिए यह जवाब काफ़ी है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अतः एक मर्द की विभिन्न अवस्थाओं में जो ज़िम्मेदारियाँ हैं उन्हें इसे अदा करने की कोशिश करनी चाहिए। अपने घरों को एक ऐसा नमूना बनाना चाहिए जहाँ प्यार, मुहब्बत का वातावरण हर समय क़ायम रहे। एक मर्द पति भी है, बाप भी है, बेटा भी है इस दृष्टि से उसे अपनी ज़िम्मेदारियों को समझना चाहिए और भी अनेक रूप हैं मर्दों के, लेकिन ये तीन रूप मैंने बयान किए हैं ताकि घर की एकता जो आधार है, समाज में शांति का द्योतक तभी बन सकता है जब इस आधार पर अमन क़ायम हो और इसमें अधिक से अधिक सुन्दरता पैदा करने की कोशिश की जाए। अल्लाह तआला हम सबको इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।